Dr. Kaushal Kumar
B.A. II (H) III
Sugar

DATE:

चीनी विकास निधि Sugar Development FUND)

1982 में लोकसभा द्वारा पारित "चीनी विकास निधि" की स्थापना की गई। इस निधि का प्रयोग नरम शर्तों पर उधार देकर चीनी उद्योग का पुनः स्थापन एवं आधुनीकरण करना है। इस नीधि से चीनी उद्योग के सम्बन्ध में अनुसंधान के लिए भी अनुदान दिये जाते हैं। इस निधि के आधीन 1997 तक 1,936 करोड़ रुपये की राशि उपलब्ध है जिसमें से अभी तक 1,160 करोड़ रुपये गन्ना विकास और चीनी उद्योग के आधुनीकरण के लिये दिये जा चुके हैं।

चीनी उद्योग की समस्याएँ :-

चीनी के उत्पादन में अनियमित प्रवृति (Erratic Trend) का कारण यह है कि यह एक कृषि आधारित उद्योग है और इसके उत्पादन में परिवर्तन वर्षा की अनिश्चितता पर निर्भर करता है। दूसरे गन्ने का उत्पादन बहुत हद तक गन्ने की कीमत पर निर्भर करता है जो कि उद्योग का मुख्य कच्चा माल है। गन्ने का उत्पादन एक ओर तो प्रतीयोगी फसलों पर निर्भर करता है और दूसरी ओर सरकार द्वारा निश्चित की गई गन्ने की कीमतों पर। सरकार के अतिरिक्त न नीति के अतिरिक्त गन्ने और गुड़ की कीमतों के सम्बध का चीनी के उत्पादन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। इसकी मुख्य समस्याएं निम्न है—

1. स्थिति-निर्धारण (Location) के ढांचे में परीवर्तन :- चीनी उद्योग का उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थानीकरण हुआ जो मिलकर 1960-61 में कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत उपलब्ध कराते थे। उत्पादन लागत सम्बन्धी विश्लेषणात्मक अध्ययनों यह पता चला कि उत्पादन का प्रादेशिक ढांचा अविवेकपूर्ण था चूंकि गन्नो कटने के बाद उसका रस सूखना आरम्भ हो जाता है। यह है कि आवश्यक है,